पाँचवा अध्याय : उपसंहार

उपसंहार

उपेंद्रनाथ ' अश्क ' जी का नाम हिंदी साहित्य के लिए नया नहीं हैं । सफल नाटककार, उपन्यासकार, कथाकार, एक सफल कवि, आलोचक, संस्मरणकार आदि उनके रूप है। सभी विधाओं में अधिकार पूर्वक लेखनी चलानेवाले अश्क कलम के सिपाही हैं । एक कवि के रूप में साहित्य में पदार्पण उन्होंने किया और आगे सभी विधाओं में श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ कृतियों का निर्माण किया ।

' अश्क ' जी के साहित्य में जीवन का प्रतिबिंब झलकता हुआ दिखाइ देता हैं । मध्यवर्गीय समाज की दशा का सही चित्रण उनकी विशेषता हैं । बचपन से ही घोर दारिद्र्य में पलनेवाले अश्क अपनी लगन, जिद्द और आत्मविश्वास के बलपर जीवन में सफलता से मंझिल पर पहुँच गये । उन्होंने अनेक जगहों पर नौकरी की लेकिन उनका लेखक उन्हें कहीं भी टिकने नहीं देता था । जहाँ पर भी उनके स्वाभिमान को ठेस पहूँची उन्होंने नौकरी को तिलांजली दे दी । उनके बचपन के जो आरमान थे वक्ता, वकील, अध्यापक, अभिनेता, संपादक, प्रकाशक और डायरेक्टर बनने के सपने साकार हो गये । प्रकृति साथ न देते हुए भी वे निरंतर साहित्य सृजन का कार्य करते रहे । जीवन में उन्होंने तीन ब्याह किये और अंतिम ब्याह से उन्हें परितृप्ती मिल गयी । कौशल्या अश्क का सहयोग उन्हें सही दिशा में ले गया । नीलाभ का प्रकाशन और बीमारी के दिनों में कौशल्या जी ने बहुत ही सुंदरता से सहायता की । अश्क जी को बनाने में कौशल्या अश्क का बहुत बडा हाथ हैं । खुद के साहित्यकार की बलि चढ़ाकर उन्होंने उपेंद्रनाथ के लिए भगवान के पास दुवाँए माँगी । कौशल्या जी के त्याग और तप के कारण अश्क के रेगिस्तान जैसे जीवन में बसंत की बहार आ गयी । अश्क जी ने साहित्य का सृजन किया लेकिन कौशल्या ने अश्क की जिंदगी सृजीं हैं ।

अश्क जी ने नाट्य-रचना का प्रारंभ 1937 से किया और दिन-ब-दिन आगे बढते गये । उन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, व्यंग्यात्मक, राजनीतिक और समस्या प्रधान नाटकों

का निर्माण किया । ऐतिहासिक नाटकों में उस समय की सामंत युगीन नैतिकता, आदर्शवादिता, अंह-भावना आदि प्रवृत्तियों पर उन्होंने व्यंग्य किया हैं । अश्क जी के सबसे सुंदर सामाजिक नाटक हैं । इन नाटकों में उन्होंने मानव के सहजात प्रवृत्तियों का चित्रण किया हैं । पाश्चात्य संस्कृती का अंधानुकरण करनेवाला हमारा समाज आज हमारी श्रेष्ठ भारतीय संस्कृती को भूलता जा रहा हैं । पाश्चात्य समाज का खोल चढाकर भारतीयों का जीवन कितना विफल हो रहा हैं, यह भी उन्होंने दिखाया हैं । ज्यादातर उनके नायिका प्रधान नाटक हैं । आज की शिक्षित स्त्री शिक्षा के कारण वास्तव में सुधर रही हैं ? या उसका जीवन घोर विवंचनाओं में फँसता जा रहा हैं । आधुनिक स्त्रीयों का जीवन नजदीक से देखने के कारण उनके स्वभाव के हर पहेलु से अश्क जी वाकिफ हैं । मानव मन में उठनेवाले भाव-भावनाओं का चित्रण, मानसिक आवस्था और अर्न्तद्वंद्व का अंकन उनके कृतियों में सफलता से हुआ हैं । कैद, उड़ान, भँवर, अलग-अलग रास्ते की नायिकाएँ अपने जीवन में छटपटाती हुएी नजर आती हैं ।

अश्क जी सफल नाटककार के साथ श्रेष्ठ एंकाकीकार भी हैं । उन्होंने व्यंग्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, समस्यात्मक एकांकी लिखे हैं । अश्क जी ने लगभग 65 तक अतित्तुम् एकांकीएँ लिखी हैं । एकांकी के साथ ही उन्होंने 'गिरती दीवारें ' और ' गर्म राख ' जैसे बृहद् उपन्यासों का भी सृजन किया हैं । अश्क जी के 6-7 काव्य संग्रह भी हैं । संस्मरण, निबंध, विचार लेख और अनुवादकार के रुप में भी वे सफल रहे हैं । सभी विषओं पर उनका जबर्दस्त अधिकार था । कहानीकार के नाम से तो अश्क जी प्रख्यात हैं । उनकी कहानियाँ लगभग 250 के आस-पास मिलती हैं । हिंदी के साथ ऊर्दू, पंजाबी और अँग्रजी में भी उन्होंने साहित्य लिखा हैं ।

मनोवैज्ञानिक नाट्य परम्परा का उद्‌भव संस्कृत साहित्य से मिलता हैं । इस परम्परा ने निर्झर के भाँति जन्म लेकर नदियों से मिलती हुई सागर में समा गयी हैं । मनोवैज्ञानिक परम्परा को सदृढ बनानें मे पाश्चात्य लोगों का बहुत बडा योगदान हैं ।

मनोवैज्ञानिक साहित्य को जन्म देनेवालों में फ्राईड और युंग प्रमुख हैं । इस परम्परा का प्रभाव उत्तरोत्तर बढता गया । आज मनोवैज्ञानिक नाट्य परम्परा का विकसित रुप मिलता है । इस परम्परा का प्रभाव अश्क जैसे श्रेष्ठ और सजग नाटककार पर पडना स्वाभाविक हैं । पाश्चात्य यथार्थवादी नाटककार इब्सन, बर्नार्ड शॉ, शेक्सपियर, टाल्सटाय और चेखब आदि नाटककारों का प्रभाव अश्क पर विशेष रुप से मिलता हैं । संस्कृत और हिंदी के प्रमुख नाटककारों का योगदान अश्क को मिला हैं । पाश्चात्य और संस्कृत नाट्य-शैली का सुंदर समन्वय करके उन्होंने नये मार्ग का अन्वेषण किया । अश्क के नाटक यथार्थवादी होने के कारण हृदय को छू लेते हैं । उनके नाटकों में आंतरिक द्वंद्व, अपराधी ग्रंथी, स्वप्न शैली, हीनत्व, आत्मवंचना, ईर्ष्या, द्वेष, फ्राइडियन कामप्रवृत्ति तथा स्वच्छन्दता आदि मानवीय सहजात प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं ।

हिंदी में प्रसाद जी के नाटकों में सर्वप्रथम मनोविज्ञान के दर्शन होते हैं । आधुनिक साहित्य में तो मनोविज्ञान का ही सहारा लिया जा रहा हैं । अनेक नाटककारों ने अपनी कृतियों में मानवमन की गुथियों को सुंदरता से स्पष्ट किया हैं । इस परम्परा में आनेवाले आज के श्रेष्ठ नाटककार ' वृन्दावनलाल वर्मा, चिरजीत, विष्णू प्रभाकर, अश्क, रामकुमार वर्मा और डा. शेष आदि प्रमुख हैं । आधुनिक काल में सफल और सुंदर मनोवैज्ञानिक नाटक लिखनेवाले नाटक के मसीहा मोहन राकेश जी हैं ।

अश्क जी ने 'भँवर' नाटक में सुशिक्षित नारी के वैवाहिक समस्या का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया हैं । " भँवर ' में क्या वस्तु और क्या शिल्प - सभी दृष्टि से सम्पुर्णता का आभास मिलता हैं कि बडे-से-बडा छिद्रान्वेषी भी उसमें शायद ही कोई छिद्र ढूँढ सके ।"[1] अश्क जी ने अपने - कृतियों के माध्यम से अभिनव प्रयोग किये हैं । वास्तव में वे हिंदी के पहले नाटककार हैं जिन्होंने परम्परा से हटकर सजगता पूर्वक नाटक की

---

1) सुरेंद्र पाल भँवर : एक विवेचनात्मक परिचय पृ.सं. 10

आधुनिकतम शिल्प-शैली का प्रयोग किया हैं । ' भँवर ' में उन्होंने सुंदर कथावस्तु का चयन किया हैं । चरित्र-प्रधान नाटक होने पर भी उन्होंने छोटे-से-छोटे पात्र को भी खूबी से अंकित किया हैं । इसलिए उनके कुछ पात्र रंगमंचपर आते ही नहीं हैं लेकिन दर्शकों के स्मृति में हमेशा के लिए विराजमान हो जाते हैं । देश-काल-वातावरण की दृष्टि से तो यह नाटक अनुपम ऐसा हैं । संवाद और भाषाशैली का प्रयोग तो प्रसंगानुकूल, पात्रानुकूल और परिस्थितिजन्य हुआ हैं । ' भँवर ' दुखान्त और गंभीर नाटक होते हुऐ भी लेखक ने उसमें हास्य-व्यंग्य के छींटे देकर सुंदरता से सवाँरा हैं । इसलिए हम कह सकते हैं कि- ' भँवर ' नाट्य-शिल्प की दृष्टि से सफल नाटक हैं ।

' भँवर ' का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया जाए तो वह एक सफल मनोवैज्ञानिक नाटक हैं । ' भँवर ' की नायिक ' प्रतिभा ' के चरित्र में मनोविज्ञान के सभी गुण स्पष्टता से दिखाई देते हैं । प्रतिभा ने प्रो. नीलाभ के व्यक्तित्व का आत्मीकरण भर कर लिया हैं । आत्मीकरण करनेवाला व्यक्ति श्रध्देय व्यक्ति का अनुकरण करता हैं उसी तरह ही प्रतिभा ने भी प्रो. नीलाभ का अनुकरण किया हैं लेकिन उसे वह आत्मसात नहीं कर सकी । प्रतिभा एक दिवास्वप्न देखनेवाली युवती हैं । अपने ही रंगीन सपनों में खोई हुएी और वास्तविकता से डरनेवाली यह नारी दिखाई देती हैं । अपने ही सपनों में वह सुख-दुःख का अनुभव करती हैं । इसकारण वह यथार्थ का डटकर सामना नही करती तो उससे वह भागने का प्रयास करती हैं । प्रतिभा खुद को बुध्दिवादिनी मानती हैं । इसलिए वह साधारण जीवन से मुँह मोडती फिरती हैं । प्रतिभा वास्तव में बुध्दिवादिनी नहीं हैं । बौध्दिकता का खौल चढाकर वह घुमती हैं लेकिन उसके अन्दर किसी कोने में स्त्री-सुलभ भाव भरे हुए हैं । यही कारण हैं कि प्रतिभा बौध्दिकता का नकाब हटाकर सभी पुरुषों को अपने कसौटी पर कसने का प्रयत्न करती हैं । प्रतिभा में छिपी मृगतृष्णा हर पुरुष को देखकर भडक उठती हैं । लेकिन जब वह पुरुष के स्वभाव से परिचित हो जाती हैं तब उसमें प्रतिक्रिया आरंभ होने

लगती हैं । जिस पुरुष के लिए उसके मन में विश्वास कम हुआ वही उसमें निराशा की भावना बढ़ जाती हैं।

प्रतिभा को निराशा ने जकड लिया हैं । वह वास्तविकता का स्वीकार नहीं कर सकती । प्रतिभा अपने जीवन साथी में सिर्फ अच्छाई ही देखना चाहती हैं। वह अपने जीवन साथी के गुण-दोषों को स्वीकार नहीं कर सकती उसमें यह संकुचित प्रवृत्ति दिखाई देती हैं । प्रतिभा खूब शिक्षित, सुंदर और बुध्दिवादी हैं इसलिए उसमें अहम् भावना भी दिखाई देती हैं । सभी लोगों को वह अपने आस-पास मँडलाने के लिए विवश कर देती हैं । प्रतिभा वास्तव में भ्रमर प्रवृत्ति वालों के प्यार से खेलती हैं जिसतरह बिल्ली चुहों से खेलती हैं उसीतरह ही वह भी उन लोगों से खेलती हैं । अपने एक ही मुस्कान से वह दिवानों को पागल बनाती हैं और सबको सदा के लिए बीना-दाम के गुलाम बना देती हैं । किसी को हँसाती हैं, किसी को हँसने का अवसर देती हैं, किसी पर व्यंग्य करती हैं इसकारण उसके अंहम को तृष्टि मिलती हैं । प्रतिभा किसी को भी प्यार नहीं करती, उनके साथ सिर्फ खिलवाड करती हैं । वह एक यत्रंणाप्रिय युवती हैं । सभी को चोट पहुँचाकर वह सुख का अनुभव करती हैं । सभी के साथ वह निर्ममता से पेश आती हैं । अपने स्वार्थ के लिए वह माँ-बाप, भाई-बहन, पास-पडोसी और सखी-सहेलियों से भी समय-समय पर बेदर्दी से चोट करती हैं । सखी-सहेलियाँ और अपनी बहनों को भी वह ईर्ष्या से जलाती हैं । इसप्रकार सभी को जलाने और प्रताडित करने से उसके मन को शांति मिल जाती हैं ।

अश्क जी ने प्रतिभा के चरित्र में स्त्रियों के सभी सहजात गुणों का चित्रण किया हैं । पतिपरिताक्त्या, सुंदर, सुशिक्षित और बुध्दिवादी स्त्री के मन में जो भाव-भावनाएँ उठती हैं उसी तरह की भाव-भावनाएँ और मानसिक अर्न्तन्द्वन्द्व प्रतिभा के चरित्र में चित्रित किया हैं। निराशा, हीनत्व और कुण्ठा ग्रस्त स्थिति में जीनेवालों की स्थिति किसप्रकार हो जाती हैं इसके भी दर्शन इसमें हो जाते हैं । भँवर के अन्य पात्र प्रतिभा के चरित्र को उभारने में सहायक बन गये हैं । लेखक ने हरदत्त के माध्यम से इस प्रवृत्ति को सुलझाने के लिए

उपाय भी बताये हैं ।

सभी दृष्टि से और सूक्ष्मता पूर्वक देखने पर यह नाट्य-कृति बहूत ही सुंदर लगती हैं । इस कृति को सफल और सुंदर बनाने का सब श्रेय अश्क जी को ही देना चाहिए । आधुनिक नाट्य साहित्य में अश्क संस्कृत और पाश्चात्य पध्दतियों का समन्वय करके एक नये शिल्प-शैली का निर्माण किया है । ' भँवर ' सभी दृष्टि से सम्पुर्ण और संपन्न ऐसा नाटक हैं उसमें किसी भी बडे-से बडा छिद्रान्वेषी को भी शायद ही कोई छिद्र मिल सकेगा । सुरेंद्र पाल जी ने ' भँवर : एक विवेचनात्मक परिचय ' में इस कृति के. बारें सार्थक और सुंदर शब्दों में लिखा हैं -- " यदि मुझसे कोई पूछे कि वस्तु और शिल्प दोनों दृष्टियों से अश्क के नाटको में सर्वश्रेष्ठ कौन-सा नाटक हैं तो मैं ' भँवर ' का ही नाम लूँगा । और मैं ही नहीं कितने ही दूसरे लोग भी इस बात से सहमत होंगे । " इस कथन से ही ' भँवर ' की सार्थकता, महत्ता और उसकी गरिमा का पता लग जाता हैं ।

उद्देश्य :-

अश्क जी का ' भँवर ' एक "सोदेश्य" नाट्य कृति हैं । इसमें आज के शिक्षित, सुंदर, बुध्दिवादी और पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करनेवाली स्त्रीयों के प्रति व्यंग्य किया हैं । आज के स्त्रियों के प्रतीक रुप में प्रतिभा का चित्रण किया गया हैं । आज की शिक्षा वास्तव में स्त्रियों का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं या उन्हें गलत रास्तेपर ले जा रही हैं ? शिक्षा प्राप्त स्त्री अकेली अपने बलबुते पर खडी रह सकती है ? शिक्षित स्त्रियों में स्वत्व को लेकर प्रश्नचिन्ह खडा हो रहा है क्या आज की स्त्री उसके विवर्त से बाहर निकल सकेगी ? आज के खूब शिक्षित स्त्री में बेगानापन, स्वच्छन्दता, उन्मुक्त कामेच्छा, हीनत्व, कुण्ठा और निराशा का जन्म किस कारण हो रहा हैं ? इन सब सवालों को सामने रखकर अश्क जी ने सभी का ध्यान इस ओर खिंच लिया है । स्त्री-सुलभ स्वभाव का भी आज ह्रास हो रहा हैं इस ओर

भी लेखक ने उँगली निर्देश किया हैं । आज की पढी-लिखी स्त्री खुद को ही समझने में असमर्थ हो रही हैं । अशिक्षित और अज्ञानी स्त्री इन स्त्रियों से कहीं अच्छी और समझदार थी । यहाँ पर लेखक ने भारतीय संस्कृति के गौरव को सराहा हैं । पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करनेवाले स्त्री-पुरुष शाम के भुले की तरह भटक रहे हैं । पाश्चात्य सभ्यता के क्रूर-कराल मुख से बचने के लिए लेखक ने भारतीयों को इस कृति के माध्यम से अगाह किया हैं । वास्तव में हमारी भारतीय संस्कृति ही मानव जाती का जीवन पथ प्रशस्त, सुगम, और सफल बनाने के लिए सक्षम हैं ।